11 / 02 / 75 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

माया से युद्ध में विजयी आत्मा बनने का अनुभव

➢➢ मैं सहजयोगी आत्मा हूँ...

➢➢ श्रेष्ठ योगी आत्मा हूँ...

➢➢ सफलता मूर्त आत्मा हूँ..

➳_ ➳ मैं परमात्म संग के रंग में रंग कर बाप समान बन गयी हूँ...

→ मैं अपने कर्मयोगी जीवन द्वारा

→ और गुण मूर्त स्वरुप से सबकी सेवा कर रही हूँ..

→ मैं स्वय द्वारा बापदादा को प्रत्यक्ष कर रही हूँ...

→ मैं सदा इसी स्मृति में स्थित हो हर कर्म कर रही हूँ कि

- मैं बाबा को प्रत्यक्ष करने वाली सैम्पल आत्मा हूँ...
- हर बात में मैं सैम्पल हूँ...
- इस स्मृति से मेरे पुरुषार्थ में तीव्रता आ रही है..
- मैं आराम के साधनों से अलबेली नहीं हो रही...
- साधन होते हुए भी उनका त्याग करने वाली मैं त्यागी आत्मा हूँ...

  - मैं सहज साधनों द्वारा योगी, सहजयोगी आत्मा हूँ...

➢➢ मैं श्रेष्ठ भाग्यवान आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मेरी श्रेष्ठ तकदीर का सितारा सदा चमकता रहता है...

➳_ ➳ स्वयम भगवान आकर मेरी त्कदाए की रेखाएं परिवर्तन कर रहे हैं...

→ तकदीर बनाने वाले बाप की डायरेक्ट सन्तान मैं आत्मा अपनी श्रेष्ठ व अविनाशी तकदीर बना रही हूँ...

→ मैं हर संकल्प, बोल और कर्म में फालो फादर कर रही हूँ...

→ मेरा हर संकल्प बाप समान, सेवा अर्थ हो रहा है...

→ मेरे हर बोल में नमर्ता, निर्मानता, महानता है...

- मैं स्मृति स्वरुप में बेहद की मालिक आत्मा हूँ..

  - साथ ही विश्व सेवाधारी भी हूँ...
  - मैं सर्व के प्रति सत्कारी
  - दाता और वरदाता हूँ...

➢➢ मैं फालो फादर करने वाली, रहमदिल आत्मा हूँ...

➳_ ➳ मैं निरंतर योगी आत्मा हूँ...

→ मैं विजयी रत्न आत्मा हूँ...

- निंदा को भी स्तुति में परिवर्तन कर रही हूँ..
- ग्लानी को गायन में परिवर्तन कर रही हूँ...
- ठुकराने को सत्कार में परिवर्तन कर रही हूँ...
- अपमान को स्व अभिमान में परिवर्तन कर रही हूँ...
- अपकार को उपकार में परिवर्तन कर रही हूँ...
- माया के विघ्नों को बाप की लग्न में मगन होने के साधन में परिवर्तन कर रही हूँ...

▶ मैं विजयी आत्मा सर्व के प्रति स्नेही और सहयोगी बन रही हूँ...

▶ मैं निरंतर बाप की याद और सेवा में मग्न रहने वाली विजयी आत्मा हूँ...

▶ और इस प्रकार मैं विजयी आत्मा अष्ट रत्न आत्मा बन रही हूँ...